51 कृषि उत्पादकता

(पिछड़ेपन के कारण, सुधार के उपाय, कृषि विकास के कार्यक्रम, कृषि में विकास की संभावनाएँ, कृषि में आधुनिकता)

अभ्यास

❖ **बहुविकल्पीय प्रश्न**

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 512 का अवलोकन कीजिए।

❖ **अतिलघुउत्तरीय प्रश्न**

अतिलघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर के लिए पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ संख्या- 512 व 513 का अवलोकन कीजिए।

❖ **लघुउत्तरीय प्रश्न**

1. भारत में कृषि की निम्न उत्पादकता के तीन प्रमुख कारण लिखिए।

उ०– भारत में कृषि की निम्न उत्पादकता के तीन प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

(i) कृषि जोतों का आकार

(ii) कृषि का वर्षा पर निर्भर होना।

(iii) अनार्थिक जोतों की अधिकता

2. भारतीय कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने के तीन उपाय बताइए।

उ०– भारतीय कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने के तीन उपाय निम्नलिखित हैं–

(i) कृषि योग्य क्षेत्र में वृद्धि करना।

(ii) सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना।

(iii) उन्नतशील सुधरे हुए बीजों का प्रयोग करना।

3. हरित क्रांति क्या है? हरित क्रांति की दो उपलब्धियाँ लिखिए।

उ०– हरित क्रांति का अर्थ– भारतीय कृषि को अल्प उत्पादकता के दोषों से मुक्त करने के लिए सरकार ने 1967-68 में, जो अद्वितीय कार्यक्रम चलाया, उसे हरित क्रांति नाम दिया गया। हरित क्रांति से आशय कृषि विकास तथा कृषि उत्पादन बढ़ाने के क्रांतिकारी कार्यक्रम से है, जिसने कृषि व्यवस्था को बदलकर रख दिया। हरित क्रांति का उद्देश्य कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ कृषि की परंपरागत तकनीकी को छोड़कर संरचनात्मक परिवर्तनों के साथ नवीनतम तकनीकी को अपनाना तथा कृषि यंत्रों, सुधरे हुए बीजों, रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों के प्रयोग से भारत को कृषि उत्पादों में आत्म-निर्भर बनाना था।

(i) हरित क्रांति के कारण भारत कृषि उत्पादन में आत्म-निर्भर बन गया।

(ii) हरित क्रांति ने भारतीय निर्वाहमूलक कृषि को लाभदायक व्यवसाय में बदल दिया।

4. भारत में कृषि की तीन भावी संभावनाओं को लिखिए।

उ०– भारत में कृषि की तीन भावी संभावनाएँ निम्नलिखित हैं–

(i) कृषि क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकी का विस्तार।

(ii) उन्नतशील तथा अधिक उपज देने वाले बीजों का उपयोग।

(iii) कृषि का पारंपरिक स्वरूप बदलने की संभावना।

5. कृषि का यंत्रीकरण क्या है? कृषि के यंत्रीकरण के दो लाभ लिखिए।

उ०– सरकार द्वारा कृषि में नवीनतम तकनीकी, आधुनिकतम प्रविधियों एवं नवीनतम कृषि के यंत्रों का उपयोग करना, कृषि का यंत्रीकरण कहलाता है।

कृषि के यंत्रीकरण के दो लाभ निम्नलिखित हैं–

(i) कृषि यंत्रीकरण से उत्पादकता में वृद्धि।

(ii) श्रम एवं समय की बचत।

6. हरित क्रांति को सफल बनाने के कोई तीन उपाय लिखिए।

उ०– हरित क्रांति को सफल बनाने के तीन उपाय निम्नलिखित हैं–

(i) हरित क्रांति का क्षेत्र बढ़ाकर, उसे संपूर्ण देश में लागू करने की व्यवस्था की जाए।

(ii) हरित क्रांति के अन्तर्गत कृषि की सभी फसलों को सम्मिलित किया जाए।

(iii) भूमि सुधार कार्यक्रमों को गंभीरता से लागू किया जाए।

❖ **विस्तृत उत्तरीय प्रश्न**

1. भारत में कृषि के पिछड़ेपन (निम्न उत्पादकता) के क्या कारण हैं? कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने के सुझाव दीजिए।

उ०– भारत में कृषि के पिछड़ेपन (निम्न उत्पादकता) के कारण- भारत में कृषि की निम्न उत्पादकता के निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं–

(i) कृषि जोतों का आकार– भारत में कृषि जोतों का आकार विभाजित होते-होते बहुत छोटा रह गया है, जिनमें कृषि यंत्रों से खेती करना संभव नहीं है। वैज्ञानिक ढंग से कृषि न हो पाने तथा सिंचाई के अभाव में इनमें प्रति हेक्टेअर उत्पादन बहुत कम रहता है।

(ii) वर्षा पर निर्भरता– भारत में 50% कृषि भूमि अपने उत्पादन के लिए वर्षा पर निर्भर है। वर्षा की अनिश्चितता के कारण भारतीय कृषि 'वर्षा का जुआ' बन कर रह गई है। इस क्षेत्र को सिंचाई की सुविधाएँ उपलब्ध न हो पाने के कारण कृषि में उत्पादकता कम है।

(iii) कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव– भारत में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति बन जाने से कृषि भूमि पर जनसंख्या का अधिक दबाव बन गया है। आज भी देश की लगभग 70% जनसंख्या आजीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर है। भूमि पर आश्रित लोगों की संख्या बढ़ते जाने से ग्रामीण क्षेत्रों में अदृश्य बेरोजगारी तथा अल्प-रोजगार की समस्या बढ़ी है। भारत में प्रतिव्यक्ति की भूमि की उपलब्धता 2.1 एकड़ है, जिससे यहाँ प्रति हेक्टेयर उत्पादन अपेक्षाकृत कम है।

(iv) अनार्थिक जोतों की अधिकता– भारत के अनेक राज्यों में चकबंदी न हो पाने के कारण छोटी-छोटी जोतें अनार्थिक हैं, जिनमें उत्पादन बहुत कम रह गया है। देश में कृषि-जोतों का औसत आकार केवल 1.55% हेक्टेअर है। कुल कार्यशील जोतों में से लगभग 59% जोतों का आकार तो एक हेक्टेअर से भी कम है। खेतों के बिखरे व छोटे होने के कारण भूमि का अपव्यय तो होता ही है, स्थायी सुधार भी संभव नहीं होता।

(v) दोषपूर्ण भूस्वामित्व– भारत में दीर्घकाल तक लगभग 40% भूमि जमींदारों के चंगुल में रही, उन्होंने भूमि की उर्वरकता बनाए रखने के लिए कोई प्रयास ही नहीं किया, जिससे इसकी प्रति हेक्टेअर उत्पादकता कम हो गई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यद्यपि मध्यस्थों को हटाने के लिए अनेक अधिनियम पारित किए गए किंतु वास्तव में जमींदारों से बहुत कम भूमि ही खेती करने वालों को मिल पाई है। वास्तविक कृषकों की विशेष सुरक्षा भी उपलब्ध नहीं कराई गई।

(vi) पुराने कृषि यंत्र– भारतीय परंपरावादी निर्धन कृषक आज भी प्राचीन दोषपूर्ण कृषि यंत्रों का प्रयोग करके कृषि से कम उत्पादन पा रहा है। कृषक या तो आधुनिक यंत्रों को खरीद ही नहीं पाता और खरीद पाता है तो उसके पास उनके उपयोग लायक विस्तृत खेत नहीं है।

(vii) **कृषकों की अज्ञानता और साधनहीनता–** भारतीय कृषि और कृषक लंबे समय तक जमींदारों का शोषण सहते-सहते अज्ञानी और साधनहीन बन गया है। उसे कृषि की नवीनतम प्रविधियों का न तो ज्ञान है और न उन्हें सुलभ करने के संसाधन हैं। अत: भारतीय कृषि आज भी अपनी अल्प उत्पादकता पर आँसू बहा रही है।

(viii) **उन्नतशील तथा सुधरे बीजों का अभाव–** भारतीय कृषक आज भी अपनी उत्पादित फसल को ही बीजों के रूप में प्रयोग कर रहा है, जो प्राय: अच्छे बीज नहीं होते। उन्नतशील तथा सुधरे बीजों के अभाव में भारतीय कृषि अल्प उत्पादकता के रोग से ग्रसित है।

(ix) **उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग न होना–** साधनहीन कृषक न तो रासायनिक उर्वरक खरीद पाता है और न कीटनाशक। अत: उसकी कम उर्वरक भूमि होने के कारण तथा फसल कीड़े-मकोड़ों के दुष्प्रभाव से कम उत्पादन ही दे पाती है।

(x) **अन्य कारण–** भारतीय कृषकों को वित्त, भंडारण, भूक्षरण, फसल बीमा की सुविधाएँ तथा फसल की उचित कीमत न मिल पाने से भी कृषि में अल्प उत्पादकता की समस्या बनी हुई है।

भारत में कृषि उत्पादन बढ़ाने के उपाय (सुझाव)– भारत के राष्ट्रीय व्यवसाय-कृषि की दशा में गुणात्मक सुधार लाना आवश्यक है। यह कार्य भूमि की उर्वरता बढ़ाकर तथा कृषि व्यवस्था में वैज्ञानिक प्रविधियों का प्रयोग करके ही किया जा सकता है। भारतीय कृषि की उत्पादकता बढ़ाने हेतु निम्न उपाय किए जा सकते हैं–

(i) **कृषि जोतों के आकार में वृद्धि–** भारत में कृषि की उत्पादकता बढ़ाने का सर्वोत्तम उपाय कृषि की छोटी-छोटी जोतों को चकबंदी के माध्यम से विशाल जोतों में बदलना है।

(ii) **सिंचाई की सुविधाओं का विस्तार–** भारतीय कृषि की वर्षा पर से निर्भरता दूर करने का उपाय है– सिंचाई की सुविधाओं में विस्तार करना। सिंचाई की सुविधाएँ बढ़ते ही कृषि की उत्पादता कई गुना बढ़ जाएगी।

(iii) **जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण–** भारत में तीव्र गति से बढ़ रही जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण लगाकर, कृषि भूमि पर उसके दबाव को कम किया जा सकता है, जिससे कृषि उत्पादन में गुणात्मक सुधार आ जाएगा।

(iv) **अनार्थिक जोतों को आर्थिक जोतों में बदलना–** भारत में अनार्थिक जोतों को आर्थिक जोतों में बदलकर कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि दर्ज की जा सकती है।

(v) **भूस्वामित्व में सुधार–** हदबंदी तथा भूदान कार्यक्रमों के माध्यम से भारत में भूमि स्वामित्व की व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाकर कृषि में प्रति हेक्टेअर उत्पादन शीघ्रता से बढ़ाया जा सकता है।

(vi) **नवीनतम कृषि यंत्रों का प्रयोग–** भारतीय कृषक को परंपरागत प्राचीन हल को छोड़कर ट्रैक्टर, ट्रिलर, थ्रेशर तथा हारवेस्टर्स आदि कृषि यंत्रों का प्रयोग कर कृषि के उत्पादन को बढ़ाना चाहिए।

(vii) **कृषकों को नवीनतम तकनीकी का ज्ञान–** सरकार को चाहिए कि प्रत्येक जिला स्तर पर एक प्रशिक्षण केंद्र खोलकर कृषकों को नवीनतम तकनीकी तथा कृषि प्रविधियों का प्रशिक्षण देकर कृषि को कम उत्पादकता की समस्या से छुटकारा दिलाना चाहिए।

(viii) **उन्नतशील तथा सुधरे हुए बीजों का प्रयोग–** सरकार को चाहिए कि कृषि विश्वविद्यालयों में उन्नतशील तथा सुधरे हुए बीजों का विकास करके, उन्हें कृषकों को वितरित करे। उन्नतशील तथा सुधरे हुए बीज कृषि की दिशा और दशा को बदलने में सक्षम रहेंगे।

(ix) **उर्वरक तथा कीटनाशकों का प्रयोग–** भारतीय कृषकों को उचित दर एवं मात्रा में रासायनिक तथा जैविक उर्वरक और कीटनाशक सुलभ कराए जाएँ। इनका उपयोग करके भारतीय कृषक कृषि की कम उत्पादकता के कलंक को मिटाने में सफल होंगे।

(x) **अन्य सुझाव–** भारतीय कृषकों को दीर्घकालीन ऋण, उचित भंडारण तथा विपणन की सुविधाएँ देकर एवं मृदा क्षरण पर नियंत्रण लगाकर और फसलों को रोगों व कीड़े-मकोड़ों के विनाश से बचाकर कृषि से अधिक उत्पादन पाया जा सकता है।

2. हरित क्रांति के लाभों एवं हानियों का वर्णन कीजिए।

उ०– हरित क्रांति के लाभ– हरित क्रांति से निम्नलिखित लाभ प्राप्त हुए हैं–

(i) हरित क्रांति के कारण कृषि उत्पादन में इतनी वृद्धि हो गई है कि भारत कृषि उत्पादों में आत्म-निर्भर बन गया है।

(ii) हरित क्रांति ने भारतीय निर्वाहमूलक कृषि को लाभदायक व्यवसाय में बदल दिया है।

(iii) हरित क्रांति के फलस्वरूप खाद्यान्नों का उत्पादन इतना बढ़ गया है कि भारत उन्हें आयात करने के स्थान पर उनका निर्यात करने लगा है।

(iv) हरित क्रांति के कारण कृषि उत्पादन बढ़ने से कृषक धनवान बन गया है।

(v) अधिक मात्रा में उगने वाले कई कृषि उत्पादों ने उद्योगों के लिए कच्चा माल सुलभ कराकर उनकी स्थापना का मार्ग खोल दिया है।

(vi) हरित क्रांति के कारण रोजगार के नए अवसर बढ़े हैं तथा व्यापार का विस्तार हो गया है।

(vii) हरित क्रांति भारत में बेरोजगारी और निर्धनता की समस्याएँ दूर करने में सफल रही है।

(viii) हरित क्रांति के कारण प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में भारी वृद्धि हो गई है।

हरित क्रांति से हानियाँ (दोष)– हरित क्रांति के लाभों के अतिरिक्त कुछ दोष भी हैं, जिनके कारण निम्नलिखित हानियाँ हुई हैं–

(i) हरित क्रांति कुछ फसलों तक सीमित रहने के कारण सभी फसलों को इसका लाभ नहीं मिल सका है।

(ii) हरित क्रांति का प्रभाव क्षेत्र भी कुछ राज्यों तक ही सीमित रह गया है। इससे वंचित राज्यों में आर्थिक विषमताएँ बढ़ गई हैं।

(iii) हरित क्रांति से बड़े कृषक ही लाभान्वित हो सके हैं, जिससे वे अधिक धनवान हो गए हैं।

(iv) हरित क्रांति ने कृषि का यंत्रीकरण करके बेरोजगारी को बढ़ावा दिया है।

(v) हरित क्रांति कृषि उत्पादन बढ़ाने का जो लक्ष्य लेकर चली थी, उसमें वह पूर्णत: सफल नहीं हुई है।

(vi) कृषि के यंत्रीकरण तथा फसलों में रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशकों के अधिक उपयोग से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पनप गई है।

3. भारत में कृषि के विकास के लिए किए गए सरकारी प्रयासों का विवरण दीजिए।

उ०– भारत में कृषि विकास के लिए किए गए सरकारी प्रयास– भारतीय सरकार ने कृषि की कम उत्पादकता की समस्या के निराकरण के लिए निम्नलिखित प्रयास किए–

(i) कृषि क्षेत्र में वृद्धि– भारत सरकार ने बंजर भूमि, परती भूमि तथा कटाव से बेकार भूमि को फसलें उगाने योग्य बनाकर कृषि क्षेत्र को 38% बढ़ाने का सफल प्रयास किया।

(ii) सिंचाई सुविधाओं का विस्तार– सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत अनेक बड़ी, मध्यम तथा लघु सिंचाई परियोजनाएँ प्रारंभ करके सिंचाई की सुविधाएँ बढ़ाई हैं। 18% सिंचित क्षेत्र को बढ़ाकर 55% तक कर दिया है। सिंचाई की सुविधाएँ बढ़ जाने से कृषि की उत्पादकता बढ़ गई है।

(iii) उन्नतशील सुधरे हुए बीजों का विकास– सरकार ने उन्नतशील तथा सुधरे हुए अधिक उपज देने वाले बीजों का विकास कर तथा उन्हें कृषकों को उपलब्ध कराकर कृषि उत्पादन बढ़ाने का प्रयास किया है।

(iv) रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों की उपलब्धता– सरकार ने कृषकों के लिए रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों की उपलब्धता बढ़ाकर कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए अच्छे प्रयास किए हैं।

(v) हरित क्रांति– सरकार ने कृषि व्यवसाय में हरित क्रांति जैसा चमत्कारी कार्यक्रम लागू करके भारतीय कृषि को अल्प उत्पादकता के रोग से सदैव के लिए मुक्त बना दिया है।

(vi) भूमि सुधार कार्यक्रम– सरकार ने जमींदारी उन्मूलन, चकबंदी, हदबंदी तथा भूस्वामित्व व्यवस्था में सुधार लाकर कृषि उत्पादन में आशातीत वृद्धि कर ली है।

(vii) **कृषि का यंत्रीकरण–** सरकार ने कृषि को नवीनतम तकनीकी, आधुनिक प्रविधियों तथा नई-नई विधाओं का लाभ देने के लिए उसका यंत्रीकरण कर दिया है। यंत्रीकरण कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए रामबाण सिद्ध हुआ है।

(viii) **कृषि वित्त की व्यवस्था–** सरकार ने राष्ट्रीयकृत बैंकों, ग्रामीण बैंकों, कृषि विकास बैंकों तथा कृषि-साख समितियों के माध्यम से कृषकों को दीघकालीन ऋण दिलाकर वित्त की सुविधाएँ जुटा दी हैं। वित्त की सुलभता कृषि उत्पादन बढ़ाने में बड़ी सहायक सिद्ध हो रही है। साख की सहायता से कृषक यंत्र, बीज, खाद तथा सिंचाई की सुविधाएँ जुटाकर कृषि उत्पादन बढ़ाने में सफल हो रहा है।

(ix) **राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना–** सरकार ने 1985 ई० में व्यापक फसल बीमा योजना लागू करके कृषकों को प्राकृतिक आपदाओं तथा अन्य अनिश्चितताओं से मुक्त करके कृषि उत्पादन बढ़ाने के लक्ष्य की ओर अग्रसर कर दिया है।

(x) **भंडारण तथा विपणन व्यवस्था में सुधार–** भारत सरकार ने केंद्रीय भंडारगृह बनाकर तथा कृषि उपजों की सरकारी खरीद कराकर कृषि उत्पादों के भंडारण तथा विपणन व्यवस्था को चाक-चौबंद करके कृषकों को अधिक से अधिक उत्पादन करने के मार्ग पर आगे बढ़ा दिया है।

(xi) **उत्पादन वृद्धि के प्रयास–** भारत सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, राष्ट्रीय बीज निगम आदि सरकारी संस्थान स्थापित करके कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के प्रयास किए हैं। उसने गहन कृषि जिला कार्यक्रम तथा गहन कृषि क्षेत्रीय कार्यक्रम चलाकर कृषि उत्पादन के नए आयाम बनाए हैं।

4. भारतीय कृषि की भावी संभावनाओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– भारतीय कृषि में विकास की संभावनाएँ– कृषि विकास के लिए चलाए गए कार्यक्रमों से भारत में कृषि विकास की निम्नलिखित संभावनाएँ बढ़ गई हैं–

(i) **नवीनतम प्रौद्योगिकी का विस्तार–** भारत में कृषि क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकी की खोज तथा अनुसंधान कार्यों पर बल दिया जा रहा है। अत: कृषि क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकी के विस्तार और प्रयोग की संभावनाएँ बढ़ गई हैं।

(ii) **उन्नतशील तथा अधिक उपज देने वाले बीज–** सरकार ने कृषि के लिए उन्नतशील तथा सुधरे हुए अधिक उपज देने वाले बीजों का भारी मात्रा में संग्रह कर लिया है। अत: उनके उपयोग की संभावनाएँ बलवती हो गई हैं।

(iii) **उर्वरकों तथा कीटनाशकों का समुचित उपयोग–** सरकार रासायनिक उर्वरक, जैविक उर्वरक तथा कीटनाशकों की आपूर्ति बढ़ाकर, उन्हें कृषकों को कम मूल्य पर देने की व्यवस्था कर रही है। अत: उनका समुचित उपयोग होने से कृषि उत्पादन बढ़ने की संभावना बन गई है।

(iv) **सिंचाई की सुविधाओं का विस्तार–** भारत सरकार बड़ी तथा लघु सिंचाई योजनाओं को संचालित करने के लिए कटिबद्ध है। अत: कृषि क्षेत्र के लिए सिंचाई सुविधाओं के विस्तार की संभावनाएँ बढ़ गई हैं। सिंचाई कृषि क्षेत्र की वास्तव में कायापलट कर सकती है।

(v) **कृषि क्षेत्र का विस्तार–** सरकार नवीन प्रौद्योगिकी के उपयोग से बंजर भूमि, परती भूमि, ऊबड़-खाबड़ भूमि, अनुपजाऊ भूमि तथा खेती के लिए बेकार भूमि को कृषि योग्य बना रही है। अत: कृषि भूमि का क्षेत्र बढ़ जाने की पूरी संभावनाएँ बन गई हैं।

(vi) **कृषि का पारंपरिक स्वरूप बदलने की संभावना–** भारत में कृषि का यंत्रीकरण होने, नवीनतम प्रौद्योगिकी तथा सुधरे बीजों का प्रयोग होने से भारतीय कृषि का पारंपरिक निर्वाहमूलक स्वरूप अब व्यावसायिक बनता जा रहा है। भारतीय कृषि, खाद्यान्न के साथ-साथ उद्योगों के लिए कच्चे माल उगाने के कारण अपने पारंपरिक स्वरूप को बदल रही है। निश्चय ही भारतीय कृषि का रूप व्यावसायिक बन जाने की पूर्ण संभावना है।

❖ **प्रोजेक्ट कार्य**

अध्यापक की सहायता से विद्यार्थी स्वयं करें।